परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई

हिन्दी-11

पुस्तक - आरोह

पाठ -कबीर

मॉड्यूल-1

भक्तिकाल के अग्रदूत, निर्गुण संत महात्मा कबीर हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठतम विभूति है। कबीर ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख एवं प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं।

कबीर का जन्म 1398 ई॰ में काशी में हुआ था। कहा जाता है कि इनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था। उसने लोक लाजवश इन्हें लहरतारा नामक तालाब के निकट छोड़ दिया वहीं से नीमा नामक जुलाहा ने इन्हें उठा कर इनका पालन-पोषण किया। कबीर ने भी जुलाहे का व्यवसाय अपनाया। कबीर स्वामी रामानंद के शिष्य थे। वे पढे लिखे नहीं थे।

उन्होंने अपने अनुभव से ही जीवन जगत का ज्ञान प्राप्त किया। 1518 ई॰ में इनका देहांत मगहर में हो गया। कबीर जी के नाम से एक पंथ चला,जो कबीर पंथ कहलाया।

कबीर की वाणियों का संकलन 'बीजक' नामक ग्रंथ में पाया जाता है। कबीर के शिष्यों ने इसका संकलन किया। बीजक के तीन अंश हैं- साखियाँ, सबद, रमैनी। बीजक मुक्तक काव्य है। गेय पदों को सबद कहा गया है, रमैनी में पद शैली के सिद्धांतों का विवेचन है।

कबीरदास उच्च कोटि के साधक ,संत , और विचारक थे। भारतीय समाज में व्याप्त जाति-पाँति, अंधविश्वास, बाह्य आडंबर, मूर्ति पूजा, अवतारवाद, धार्मिक संकीर्णता और कट्टरवाद का उन्होंने डटकर विरोध किया। जाति-पाँति का विरोध करते हुए उन्होंने कहा-

'जात पाँत पूछे न कोई
हरि को भजै सो हरि का होई।'

कबीर युग संधि पर पैदा हुए थे। उस समय समाज पर हठपंथियों तथा नागपंथियों का बड़ा प्रभाव था। कबीर ने निडरता का परिचय देते हुए हिंदुओं एवं मुसलमानों को ढोंग आडंबरों के लिए फटकारा।

कबीर ने सहज भाषा को अपनाया है। उनकी भाषा मिश्रित है। इनकी भाषा को सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी भाषा कहा जाता है। इसमें अरबी-फ़ारसी, ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, पंजाबी, भोजपुरी आदि शब्दों की बहुलता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनकी भाषा के संबंध में लिखा है- "भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को

उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में कहलवा दिया है। बन गया तो तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर।"

कबीर ने कहीं भी अपने काव्यों में अलंकारों का मुलम्मा चढ़ाने की कोशिश नहीं की। उनके काव्य में अलंकार स्वाभाविक रूप में आ गए हैं, इनमें प्रमुख हैं- रूपक, उपमा, अन्योक्ति, यमक, वक्रोक्ति आदि अलंकार। उन्होंने पद-योजना में विभिन्न राग-रागिनियों का ध्यान रखा है, जिसमें उनमें गेयता का गुण आ गया है। कबीर का काव्य मुक्तक शैली में रचा गया है।

कबीरदास की अधिकांश साखियों एवं पदों में शांत रस का प्रयोग है। उनकी उलटवासियों में अद्भूत रस है। शेष पदों में भक्ति विषयक शृंगार रस प्रधान है।

कबीरदास एक प्रसिद्ध समाज सुधारक रहे हैं।

पाठ में दिए गए पहले पद में कबीर ने परमात्मा को सृष्टि के कण-कण में देखा है, ज्योति रूप में स्वीकारा है तथा उसकी व्याप्ति चराचर संसार में दिखाई है। इसी व्याप्ति को अद्वैत सत्ता के रूप में देखते हुए विभिन्न उदाहरणों के द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति दी है।

कबीर जगत-ब्रह्म दोनों को दो पृथक अस्तित्व नहीं मानते। वे एक ही परम तत्व को मानते हैं। उनके अनुसार इस नानाविध संसार का रचयिता एक परमात्मा है। संसार के समस्त रूपों में उसी 'एक' की सत्ता विद्यमान है। इस भाव को व्यक्त करते हुए वे कहते हैं-

हम तो उस 'एक' परमात्मा को एक ही मानते हैं। जो लोग उस परम तत्त्व को आत्मा-परमात्मा, जीव-ब्रह्म आदि दो अलग अस्तित्व मानते हैं, उन्होंने वास्तव में उस परमात्मा को जाना नहीं है। उनके लिए संसार नरक है। अज्ञानवश वे 'एक' को 'दो' मान बैठे हैं। पूरी सृष्टि में पवन एक है, जल एक है और उसी एक ही परमात्मा ज्योति समस्त संसार में व्याप्त है।इस संसार का रचयिता भी एक है। सभी का निर्माण एक ही मिट्टी से हुआ है तथा उन्हें एक ही कुम्हार ने बनाया है।अर्थात सभी मानवों का निर्माण क्षिति ,जल ,पावक, गगन, समीर इन पाँच तत्त्वों से हुआ है तथा उनका निर्माता भी एक है। जैसे बढ़ई लकड़ी को तो काट सकता है किन्तु उसमें निहित अग्नि को नहीं काट सकता, उसी प्रकार मनुष्य का शरीर नश्वर है किन्तु उसमें निहित आत्मा अमर और अकाट्य है। वे परमात्मा सभी प्राणियों में व्याप्त है। वे ही विभिन्न रूप और स्वरूप धारण किए हुए हैं।

कबीर मनुष्य को संबोधित करते हुए कहते हैं - हे मनुष्य,संसार के मायामय रूप को देखकर यह सारा संसार लुब्ध हो गया है। तू इस झूठी माया पर गर्व क्यों करता है ? प्रभु प्रेम के दीवाने कबीर कहते हैं - जो लोग माया-मोह से मुक्त हो जाते हैं,वे निर्भय रहते हैं। उनमें किसी प्रकार का कोई भय नहीं व्यापता है।

विशेष-

कबीर का अक्खड़ स्वभाव दृष्टिगोचर होता है।

यहाँ धार्मिक आडंबरों पर तीखा प्रहार है।

मूर्ति-पूजा,पीपल-पूजा, तिलक लगाना, धर्म ग्रन्थों का पढ़ना, शिष्य बनाना - कबीर की दृष्टि में दिखावा हैं, आडंबर हैं।

कबीर ने हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के पाखंडों का विरोध किया है।

कबीर ने ढोंगी गुरुओं की अच्छी खबर ली है और सभी को उनसे बचने की सलाह दी है।

कबीर की भाषा प्रचंड, बेलाग, बेलौस तथा स्पष्ट है।

उनकी वाणी में व्यंग्य की तीखी धार है।

लरि-लरि और घर-घर में पुनरुक्त प्रकाश अलंकार है।

अनुप्रास द्रष्टव्य है-

पीपर पाथर पूजन, साखी सबदहि , घर घर मंत्र देत फिरत

सहित सिख्य सब, कहै कबीर, केतिक कहौं कहा नहिं मानै, सहजै सहज समाना।

द्वारा-

संतोष कुमार खरवाल

प्रशिक्षित स्नातकोत्तर शिक्षक ,हिन्दी

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-2, जादुगोड़ा